प्रश्न 1. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की निबन्ध-कला पर प्रकाश डालिए।

अथवा [M.D.U. May 2015]

देवदारु निबंध की तात्विक समीक्षा लिखिए। [M.D.U. 2014]

उत्तर–'देवदारु' आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का एक उल्लेखनीय निबन्ध है। इस निबन्ध में उन्होंने देवदारु नामक वृक्ष की महिमा का गान किया है। लेखक का विचार है कि देवदारु महावृक्ष होते हुए भी वृक्षराज और पर्वतीय पर्यावरण का महान् संरक्षक है। यह महादेव का प्रिय वृक्ष है। यही कारण है कि इसे देवदारु, देवतरु या देववृक्ष भी कहते हैं। इसका अस्तित्व महाभारत से भी प्राचीनतर है। निबन्धकार ने मुक्त हृदय से इसकी प्रशंसा की है। निबन्ध-कला की दृष्टि से द्विवेदी जी के निबन्धों की निम्नलिखित प्रवृत्तियों का विवेचन किया जा सकता है–

1. वैयक्तिकता की अभिव्यक्ति–प्रस्तुत निबन्ध में लेखक के विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती है। इसमें लेखक की वैयक्तिकता स्पष्ट देखी जा सकती है। यथा–"जहाँ बैठकर लिख रहा हूँ वहाँ से ऊपर और नीचे पर्वतपृष्ठ पर देवदारु वृक्षों की सोपान-परम्परा-सी दिख रही है। कैसी मोहक शोभा है। वृक्ष और भी है, लोगों ने नाम भी बताए हैं। अनायास! पर ऐसा लगता ही भर है। भगवान् न करे कोई सचमुच लुढ़का दे। हड्डी-पसली चूर हो जाएगी। जो कुछ लगता है वह सचमुच हो जाए तो अनर्थ हो जाए।" उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि द्विवेदी जी ने इस निबन्ध में वैयक्तिकता की यत्र-तत्र अभिव्यक्ति की है।

2. भाव तत्त्व की प्रधानता–द्विवेदी जी ने प्रायः ललित निबन्ध लिखे हैं। ऐसे निबन्धों में विचारों की गम्भीरता कम और भावात्मकता अधिक होती है। लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि उनके निबन्धों में विचारों की गम्भीरता नहीं है। जहाँ तक 'देवदारु' निबन्ध का प्रश्न है, यह शुद्ध रूप से ललित निबन्ध है। लेखक को पर्वतीय प्रकृति तथा वहाँ के वातावरण ने प्रभावित किया है। अनेक स्थलों पर वे भावुक होकर अपनी बात कहते हैं।

3. विषयगत मौलिकता–द्विवेदी जी के निबन्धों में विषयगत मौलिकता विद्यमान है। उनके प्रत्येक निबन्ध में विषयगत मौलिकता का प्रतिपादन हुआ है। देवदारु एक ऐसा पर्वतीय वृक्ष है जिसके बारे में शायद ही किसी ने विचार व्यक्त किए हों। लेखक स्पष्ट करता है कि देवदारु का नाम और अस्तित्व महाभारतकाल से भी पहले का है। यही कारण है कि उन्होंने मुक्त हृदय से इस वृक्ष की प्रशंसा की है। देवदारु एक सिद्धान्तवादी वृक्ष है। यह हमेशा पर्वतों पर ही उत्पन्न होता है और वहाँ अटल खड़ा रहता है। यदि हम द्विवेदी जी के सभी निबन्धों का गहन अध्ययन करें तो यह पता लग जाएगा कि उन्होंने जीवन के विविध पक्षों को निकट से देखा और परखा है। उन्होंने जीवन के अनुभवों को आधार बनाकर अनेक विषयों पर निबन्ध लिखे हैं। उनके निबन्धों का विषय पूर्णतः मौलिक है।

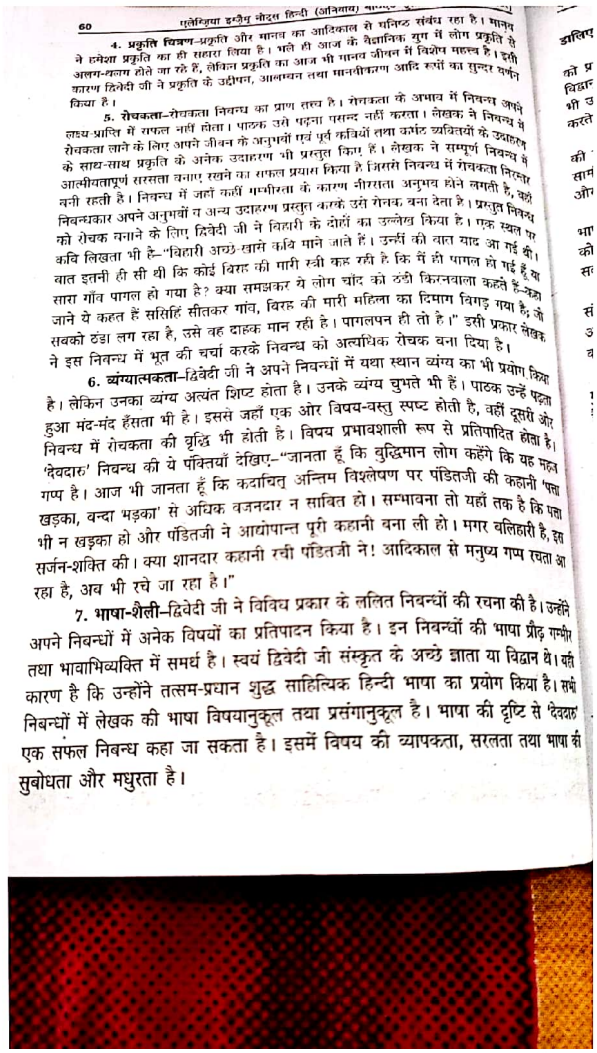

4. प्रकृति चित्रण–प्रकृति और मानव का आदिकाल से घनिष्ठ संबंध रहा है। मानव ने हमेशा प्रकृति का ही सहारा लिया है। भले ही आज के वैज्ञानिक युग में लोग प्रकृति से अलग-थलग होते जा रहे हैं, लेकिन प्रकृति का आज भी मानव जीवन में विशेष महत्त्व है। इसी कारण द्विवेदी जी ने प्रकृति के उद्दीपन, आलम्बन तथा मानवीकरण आदि रूपों का सुन्दर वर्णन किया है।

5. रोचकता–रोचकता निबन्ध का प्राण तत्त्व है। रोचकता के अभाव में निबन्ध अपने लक्ष्य-प्राप्ति में सफल नहीं होता। पाठक उसे पढ़ना पसन्द नहीं करता। लेखक ने निबन्ध में रोचकता लाने के लिए अपने जीवन के अनुभवों एवं पूर्व कवियों तथा कर्मठ व्यक्तियों के उदाहरण के साथ-साथ प्रकृति के अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैं। लेखक ने सम्पूर्ण निबन्ध में आत्मीयतापूर्ण सरसता बनाए रखने का सफल प्रयास किया है जिससे निबन्ध में रोचकता निरन्तर बनी रहती है। निबन्ध में जहाँ कहीं गम्भीरता के कारण नीरसता अनुभव होने लगती है, वहीं निबन्धकार अपने अनुभवों व अन्य उदाहरण प्रस्तुत करके उसे रोचक बना देता है। प्रस्तुत निबन्ध को रोचक बनाने के लिए द्विवेदी जी ने बिहारी के दोहों का उल्लेख किया है। एक स्थल पर कवि लिखता भी है–"बिहारी अच्छे-खासे कवि माने जाते हैं। उन्हीं की बात याद आ गई थी। बात इतनी ही सी थी कि कोई बिरह की मारी स्त्री कह रही है कि मैं ही पागल हो गई हूँ या सारा गाँव पागल हो गया है? क्या समझकर ये लोग चाँद को ठंडी किरनवाला कहते हैं–केहो जाने ये कहत हैं ससिहिं सीतकर गांव, बिरह की मारी महिला का दिमाग बिगड़ गया है; जो सबको ठंडा लग रहा है, उसे वह दाहक मान रही है। पागलपन ही तो है।" इसी प्रकार लेखक ने इस निबन्ध में भूत की चर्चा करके निबन्ध को अत्यधिक रोचक बना दिया है।

6. व्यंग्यात्मकता–द्विवेदी जी ने अपने निबन्धों में यथा स्थान व्यंग्य का भी प्रयोग किया है। लेकिन उनका व्यंग्य अत्यंत शिष्ट होता है। उनके व्यंग्य चुभते भी हैं। पाठक उन्हें पढ़ता हुआ मंद-मंद हँसता भी है। इससे जहाँ एक ओर विषय-वस्तु स्पष्ट होती है, वहीं दूसरी ओर निबन्ध में रोचकता की वृद्धि भी होती है। विषय प्रभावशाली रूप से प्रतिपादित होता है। 'देवदारु' निबन्ध की ये पंक्तियाँ देखिए–"जानता हूँ कि बुद्धिमान लोग कहेंगे कि यह महज गप्प है। आज भी जानता हूँ कि कदाचित् अन्तिम विश्लेषण पर पंडितजी की कहानी 'पत्ता खड़का, बन्दा भड़का' से अधिक वजनदार न साबित हो। सम्भावना तो यहाँ तक है कि पत्ता भी न खड़का हो और पंडितजी ने आद्योपान्त पूरी कहानी बना ली हो। मगर बलिहारी है, इस सर्जन-शक्ति की। क्या शानदार कहानी रची पंडितजी ने! आदिकाल से मनुष्य गप्प रचता आ रहा है, अब भी रचे जा रहा है।"

7. भाषा-शैली–द्विवेदी जी ने विविध प्रकार के ललित निबन्धों की रचना की है। उन्होंने अपने निबन्धों में अनेक विषयों का प्रतिपादन किया है। इन निबन्धों की भाषा प्रौढ़ गम्भीर तथा भावाभिव्यक्ति में समर्थ है। स्वयं द्विवेदी जी संस्कृत के अच्छे ज्ञाता या विद्वान थे। यही कारण है कि उन्होंने तत्सम-प्रधान शुद्ध साहित्यिक हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है। सभी निबन्धों में लेखक की भाषा विषयानुकूल तथा प्रसंगानुकूल है। भाषा की दृष्टि से 'देवदारु' एक सफल निबन्ध कहा जा सकता है। इसमें विषय की व्यापकता, सरलता तथा भाषा की सुबोधता और मधुरता है।

Scanned with CamScanner

https://youtu.be/JM12q9A5ZsU

Link 4 B.A first year students

Scanned with CamScanner